अध्याय - तिसरा

" पेहरे " नाटक में चित्रित समस्याएँ

१-१ समस्या नाटक :-

नाटककार का जीवन समकालीन मानवजीवन का प्रतिबिंब होता है। जिस देशकाल - वातावरण में वह होता है उसी से वह नाटक की सामग्री जुटाता है। उसके इर्दगिर्द चली राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक घटनाओं का और परंपराओं का प्रभाव जाने - अनजाने उसी के व्यक्तित्व पर होता है। इसप्रकार उसके जीवनपर अनेक समस्याओं का प्रभाव होता है और जाने - अनजाने उसका उद्घाटन उसके कृतित्व में होता है। लेखक ऐसी समस्याओं पर चिंतन करता है। नाटककार प्रचलित घटनाओं के परिणाम स्वरूप अपनी अनुभूति को नाटकों में व्यक्त करता है। समसामायिक जीवन में आयी समस्याओं को प्रस्तुत करता है। " वैसे तो हर नाटक एक समस्या नाटक होता है। " ऐसा कहने पर अतिशयोक्ति नहीं होगी। क्योंकि प्रत्येक नाटक अपने युग की चेतना प्रतिबिम्बित करता है।

आज का जीवन तो बड़ा गतिमान जीवन है। यंत्रयुग ने, विज्ञानयुग ने अनेक समस्याओं को हमारे सामने खड़ा किया है। प्राचीन - काल जैसा आज का जीवन शांत साफसुथरा जीवन नहीं है। अर्थाभाव और समस्याओं के कारण मनुष्य को अनेक समस्याओं का मुकाबला करना पड़ता है। आज का जीवन समस्याग्रस्त बन गया है।

डॉ॰ शंकर शेष मध्यमवर्गीय जीवन के होने के कारण विशेषत: मध्यमवर्गीय जीवन की समस्याओं का चित्रण उनके नाटकों में अनायास आ चुका है। डॉ॰ शंकर शेष ने किसी एक समस्या को केंद्र बनाकर कोई नाटक नहीं लिखा। क्योंकि उनके नाटकों में उन्होंने मानवी जीवन को केंद्र बनाया है और मानवी जीवन अनेक समस्याओं से ग्रस्त होता है। इस कारण किसी एक समस्या पर एक नाटक न होकर उनके एक ही नाटक में अनेक समस्याएँ आ गयी है। ये समस्याएँ उस नाटक का एक अंत बनकर आ गयी है।

डॉ॰ शेष मध्यमवर्गीय होने के कारण मध्यवर्ग और उससे उत्पन्न अनेक समस्याएँ उनके नाटकों में मिलती है। जैसे शिक्षाक्षेत्र में चला भ्रष्टाचार [पोस्टर] जाति - भेद की समस्या [बाद का पानी], ऐसी मध्यवर्ग को चिन्ताक्रान्त करनेवाली शैक्षणिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक अनेक समस्याओं का चित्रण उनके नाटकों में हो चुका है। वर्तमान मानव जीवन में अद्भूत ये समस्याएँ कथ्य का एक अंग बनकर आयी है। स्वातंत्र्योत्तर काल में इन समस्याओं की संख्या अधिक बढ़ गयी है। आजादी के साथ अनेक समस्याएँ हमारे आपके सामने खड़ी हो गयी है। एक यथार्थवादी सजग नाटककार के रूपमें इन समस्याओं का चित्रण उनके नाटकों में हो चुका है। पर समस्या चित्रण को प्रधानता न देकर उन्होंने मानवी जीवन को प्रधानता दी है।

डॉ॰ शंकर शेष स्वातंत्र्योत्तर कालीन नाटककार

थी। इस कारण स्वातंत्र्योत्तर काल में जो नयी नयी समस्याएँ उठ खड़ी हुयी वे अनायास उनके नाटकों में प्रतिबिम्बित हुयी है। आज के समाज में फैली प्रच्छन्नता, कुरूपता, मलिनता, का चित्रण इन नाटकों में हुआ है। इन बातों को ध्यान में लेकर हम " चेहरे " नाटक मे अनुस्यूत समस्याओं की चर्चा करेंगे।

२-२-१ प्रेम और विवाह विषयक समस्या :-

नाटककार शंकर शेष ने " चेहरे " नाटक में प्रेम की समस्या को प्रस्तुत किया है। इस नाटक में कमली एक देहाती लड़की है। बाहर की दुनिया को पहचानती नहीं। हिरोईन बनने का सपना देखती है। विनोद के साथ बंबई भाग जाने को तैय्यार होती है क्योंकि विनोद उसे हिरोईन बनाने का वचन देता है। विनोद से वह प्यार भी करती है इसलिए उसके चंगुल में फँसकर कुछ गहने पैसा लेकर बंबई जाने के लिए भाग निकली है। कमली अपना प्रेमी विनोद पर पूरा भरोसा करके उसके साथ बंबई जाने के लिए तैय्यार हो गयी है। पर विनोद की नजर उसके पैसे और गहनों पर है। विनोद कुछ न कुछ बहाना बनाकर कमली के पैसे और गहने हड़प करना चाहता है।

आज के समाज में यह यौन समस्या है कि अपने व्यक्तित्व के प्रति जागरूक युवती अपना भविष्य बनाने के लिए किसी पर विश्वास करती है वही

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

आज के समाज में कुछ नव - युवक ऐसे है जो लडकी को भगाकर बेच भी डालते है। " बेहरे " नाटक में नाटककार शंकर शेष ने इस समस्या को प्रस्तुत किया है।

२-२-२ वेश्या-व्यवसाय करनेवाली औरतों की समस्या :-

कोई नारी अपना वेश्या व्यवसाय छोड़कर अच्छी जिंदगी जीना चाहे तो यही समाज उनके चारित्र्य पर शक करना नहीं छोड़ता। उनकी पिछली जिंदगी को भूल नहीं पाते पर ऐसा क्यों। ?

अध्यापिकाजी एक ऐसी स्त्री है, जो वेश्या व्यवसाय छोड़कर लोकसेवा करने में अपना जीवन बिताना चाहती है। वेश्या - व्यवसाय से इकट्ठा की गयी सारी संपत्ति ,संस्था या स्कूल के लिए दान करती है। अध्यापन का कार्य करते - करते अपना बचा हुआ जीवन बिताना चाहती है।

अध्यापिकाजी स्कूल में नौकरी करती है। भरोसेजी के साथ वह पिछले बीस साल से रही है। किसी भी स्त्री को समाज के साथ रहना है तो पुरुष की सहाय्यता लेनी ही पड़ती है। किसी पुरुष के आधार के बिना वह रह नहीं सकती ।

पर यह खोखला समाज उन पर कियड़ उछालता है। अध्यापिकाजी खामोश बैठकर सब बातें सुनती है लेकिन निर्भय होकर सब के चेहरों से नकाब उतारती है। अध्यापिकाजी भानजी से लेकर सबका असली चेहरा समाज के सामने प्रस्तुत करती है। अध्यापिकाजी सबके सामने कहती है " भारोसेजी मुझे वेश्यालय से निकालकर लाये थे। हाँ, मैं एक वेश्या थी - आप लोग हँसते क्यों नहीं ? हँसिए। हम दोनों ने मिलकर संकल्प किया था कि बची हुई जिंदगी दूसरों के लिए जिएँगे, और हम दोनों ने पूरी ईमानदारी के साथ वैसा किया क्या हमें अतीत की लाश को कन्धे से उतार कर नई सार्थक जिंदगी जीने का हक नहीं था ?

आज के समाज में वेश्या - व्यवसाय करनेवाली स्त्री को समाज अच्छी जिंदगी जीने नहीं देता। उस स्त्री की तरफ देखने का लोगों का तरीका ही अलग अलग रहता है। समाज के सभी लोग वासनाभरी नजरों से उनकी तरफ देखते हैं। सभी लोगों की बुरी नजर उन पर पड़ी रहती है। ऐसी स्त्री के सामने एक समस्या खड़ी रहती है कि कैसे जिंदगी गुजारे ? भारोसेजी एक ऐसा नेता है कि जो वेश्या व्यवसाय करनेवाली स्त्री को इज्जत दे सकता है। भारोसेजी की मौत से यह समस्या फिर खड़ी हो जाती है।

२-२-३ " चेहरे " नाटक में सामाजिक समस्या :-

समाज में परिवार एक संस्था है। नयी पिढ़ी

और पुरानी पीढ़ी में हमेशा संघर्ष और विरोध दृष्टिगत होता है। शिक्षा, धर्म, राजनीति और अर्थ में नवीन क्रांति ने पारिवारिक जीवन को प्रभावित किया है।

पुरानी पिढ़ी के भानजी जब लाश को खण्डहर में लाया जाता है तब " मौत को गंभीरता बनाये रखो, मौत की गंभीरता बनाये रखो " ऐसा बार बार कहते है। लेकिन ये नयी पिढ़ी के युवा लोग मसान में इसलिए आते है कि लाश को अग्नि कैसे दी जाते है , यह देखने के लिए। मशान में भी ताश खेलना, ट्रांजिस्टर लाना इनको चाह है। ये युवा लोग लाश के पास बैठकर फिल्मी गानों की अन्ताक्षरी खेलते हैं और नेता बनने का फॉर्मूला भी तैय्यार करते हैं। पुरानी पीढ़ी और नयी पीढ़ी में समय के कारण, विचारों के कारण, परिवर्तनशील दृष्टिकोन के कारण, अंतर पड़ता है और विचारों में परिवर्तन होने के कारण मतभेद की समस्या खड़ी हो जाती है।

२-२-४ आर्थिक समस्या :-

किसी भी गाँव के लिए एक मसान की आवश्यकता है। बारिश के दिनों में किसी की मौत हो जाती है तो दाह -

संस्कार कैसा किया जाय ? यह समस्या खड़ी हो जाती है। इसलिए प्रत्येक गाँव के मसान में एक शेड की आवश्यकता है। मसान में शेड बनवाने के लिए पैसा चाहिए , समाज में संस्था, स्कूल, मसान की मरम्मत के लिए पैसा चाहिए। याने समाज के सामने आर्थिक समस्या खड़ी हो जाती है। आर्थिक समस्या गाँव सुधार के लिए बाधा बन गयी है। पैसों के अभाव के कारण गाँव सुधार की कोई योजनाएँ सफल नहीं होती।

सामान्य व्यक्ति भी इस अर्थव्यवस्था के अभिशापों से ग्रस्त है। " सर्वहारा वर्ग भीतर - ही - भीतर क्षुब्ध हो उठा है।[२] सामान्य व्यक्ति को बिटिया को लाने के लिए कर्ज लेना पड़ता है। आर्थिक समस्या का विकट प्रश्न सामान्य व्यक्ति को हमेशा सताता है।

२-२-५ शोषक - शोषितों की समस्या :-

आधुनिक काल में अंग्रेजों की आर्थिक नीति के संघात से क्रमशः " महाजनी सभ्यता " का उदय हुआ जिसमें शोषणकारी मूल्यों की प्रधानता पायी जाती है। इस नवीन सभ्यता के विषय में प्रेमचंद ने लिखा है " इस [महाजनी] सभ्यता

में पैसों का स्थान, सर्वोपरी है। इस सभ्यता ने समाज को दो अंगो में बाँट दिया है, जिसमें एक हड़पनेवाला है और एक हड़पा जानेवाला है। इसके फलस्वरूप देश में अमीर-गरीब की खाई प्रशस्त होती गयी, वर्ण-भेद बढ़ता गया। धनिक - वर्ग ने गरीब जनता का मुक्त शोषण किया ।[3]

" चेहरे " नाटक में भी डॉ· शंकर शेष ने शोषण , स्वार्थी, दूसरों का धन हड़प करने की मनुष्य की प्रवृति पर प्रकाश डाला है। विनोद कमली को भगाकर उसके पास जो पैसा और गहने हैं वे सब हड़प करना चाहता है। लड़कियों को फँसाना, उनके गहने छिनना और उन्हें बंबई ले जाकर बेचना[4] इसका [विनोदका] धंदा है। गैंदासिंह भी इस मामले में शामिल होता है। विनोद और गैंदासिंह कमली को फँसाकर उसकी सारी संपति आपस में बाँटना चाहते है। विनोद और गैंदासिंह अपनी नीतिमत्ता छोड़कर कमली को फँसाना चाहते हैं। समाज में आज सच्चा कौन है ? किसपर विश्वास किया जाय यह समझना मुश्किल हो गया है। हम आदमी को पहचान नहीं पाते क्योंकि आदमी को कैसा पहचाना जाय? आदमी की सच्चाई पहचानने के लिए हमारे पास कौनसी कसौटी है ? हर आदमी के चहरे के पीछे एक असली चेहरा छिपाये रहता है। इसलिए आज समाज में असली कौन और नकली कौन पहचानना एक समस्या बन गयी है।

इस नाटक में अध्यापिकाजी ने सत्य बताते समय

कहा है " ये भावानजो ---- ये जो शुरु से मृत्यु की गंभीरता बनाए रखाने का नाटक रच रहे है। सबसे पहले हमारा शोषण इन्होंने किया था। फिर भी इन्होंने मेरे गहनों को पाप की कमाई कहकर कम कीमत में खारीदा था। मेरी कमाई पाप की थी लेकिन शरीर अगर इन्हे मिल जाता तो ये उसे तीरथ - स्थान मानते।[५] ये भावानजो अध्यापिकाजी के गहने हड़प करनेवाले भावानजो की दृष्टि भारोसेजो की सारी संस्थाओं पर कब्जा करने पर है। जब से भारोसेजो बीमार है तब से भावानजो सारी संस्थाओं का उत्तराधिकारी आप को साबित करना चाहते है। इसलिए मौत को गंभीरता बनाये रखाते या अध्यापिका जी के प्रति सहानुभूति दिखाने का प्रयास करते है। कोई भी आदमी बिना मतलब के किसी के प्रति सहानुभूति नहीं दिखाता। भावानजी गाँव का नेता बनने की महत्वाकांक्षा रखाते है। अगली पंचायत पर उनकी दृष्टि गड़ी है। सभ्यता दिखाकर गाँव का गाँववालों का पैसा हड़प करना इनका नियम है।

इस गाँव के रहनेवाले परमानंदजी जो पंचायत के सदस्य बने हैं, इन्होंने अपनी विधवा, असहाय्य भाभी के खेत हड़पकर उनके बेसहारा बच्चों को निर्धन यतीम बनाया है। वे सुखा

ये सुखालाल! पंचायत के समयों का इस ने गबन किया था! चन्दे की रकमें उकारना इसकी हमेशा की आदत है।[६] धर्म शास्त्र पढ़नेवाले पंडितजी जिन्हें अछूतों के हाथ का पानी नहीं चलता लेकिन उनकी औरतें चलती है।

" चेहरे " नाटक में शोषण प्रवृति की समस्या दिखाई है। सभ्यता का मुखौटा धारण कर ये लोग सामान्य लोगों का शोषण करते है। इस पैसे की घृणित दुनिया में प्रेम, सहानुभूति, ममता, त्याग, दया आदि का कोई विधान नहीं है। शव के समक्ष ग्रामीण के खाने पर गिद्द दृष्टि रखना भोले - भाले ग्रामीण को लूटने की साजिश करना इन घटनाओं के माध्यम से नाटककार ने क्रूर मानवीय पाशविकता, संवेदनहीनता और आत्मविघटन की प्रवृति को दिखाया है।

नेताओं की खूबियों पर व्यंग्य किया है। सभ्यता का मुखौटा पहनकर नेता लोग सामान्य लोगों का शोषण करते है। नेता लोगों के पास नेता बनने का अचूक फार्मूला भी है।

" चेहरे " नाटक में नाटककार शंकर शेष ने पंचायत का पैसा हडप करना, असहायक बेसहारा भाभी का शोषण करना, लडकियों को बहला - फुसलाकर फसाना, उनके पैसे, गहने हड़प करना, बंबई ले जाकर लड़कियों को बेचना, नैतिकता - अनैतिकता, पाप - अनाचार, स्त्री - पुरुष, सम्बन्धों के नैतिक सवाल तथा तथ्यों को सामाजिकता और असामाजिकता आदि समस्याओं की चर्चा की है।

२-२-५ नीति विषयक समस्या :-

नीति और आचार के नाम पर सुखालालजी या समाज में रहनेवाले अन्य लोग भी अध्यापिकाजी तथा भरोसेजी के नाम पर अफवाहों का जहर बोते है। विधवा भाभी का छोत हड़प करनेवाला परमानंद स्वयं को सामाजिक रूप में जिम्मेदार आदमी की हैसियत से गेंदासिंह को सवाल करना अपना नैतिक कर्तव्य मानता है। साथ ही साथ कमली तथा विनोद के संबंध में इस निष्कर्ष पर पहूँचते है कि - हाँ तो, हम लोग करीब - करीब ये साबित कर चुके है कि लफंगे और इस लडकी के अनैतिक सम्बन्ध थे और अगर नहीं थे तो उनके हो जाने की पूरी गुंजाईश थी -- इस अपराध की सजा में तो उन्हें मिलनी चाहिए। परमानंद, सुखालाल, पंडितजी सभी लोगोंने समाज का शोषण किया है लेकिन अछूतों को औरतों को इन्होंने नहीं छोड़ा , पर नैतिकता की भाषा बोलते है। स्वयं जिनके पास नीति नाम की कोई वस्तु नहीं है वे भी ~~नैतिकता या स्वयं को नीति नाम की कोई वस्तु नहीं है वे भी नैतिकता या~~ स्वयं को नीतिमान समझते है। अपने अंदर झाँकने के बदले दूसरों के जीवन में झाँकते है। नैतिकता - अनैतिकता, पाप - पुण्य की इनकी परिभाषा समय के अनुसार बदलती रहती है।

धर्माधिकारियों, समाज सुधार के पाखण्ड को समस्या :-

समाज में आज धर्म, परमात्मा समाजसुधार के मूल में व्यवसायिक वृत्ति का सन्निवेश हो गया है। पाखण्डियों के पाखण्ड एवं स्वार्थ से सम्प्रति सामाजिक जीवन पर्याप्त कलुषित बना है। " चेहरे " नाटक में पाखण्डी व्यक्तिओं के जघन्य कृत्यों का प्रकाशन किया गया है। जो भगवान और धर्म का नाम लेनेवाले मेमने को खाल ओढे हुए भेडिए होते है। धर्म के तथाकथीत मठाधिशों को सुख - सुविधानुसार धर्म अपने कपडे उतारता - पहनता रहता है। इन ठेकेदारों के लोभ लालच ने मानव मन को श्रध्दा विश्वास का जितना दम घोटा है, उतना किसी पूँजिपति ने भी किसी मजदूर का शोषण नहीं किया होगा।

इन पंडितों को अछूतों के हाथ का पानी नहीं चलता लेकिन शरीर - सुख के लिए उनको औरते चलती है। इतने बौने - घिनौने पंडितजी न्यायासन पर आरूढ होकर लोगों को नैतिकता समझाते है। भोले - भाले ग्रामीण का खाना हड़पने के लिए पंडितजन अपनी चतुराई दिखाते हैं। साधारण जीवन में उनका धर्म अलग रहता है और विपत्ति के समय अलग।

आज जितने भी शासनतंत्र है वे सभी लुटेरों के हाथ में है। गणतंत्र, जनतंत्र, राज्यतंत्र, अपहरणतंत्र, शोषणतंत्र ये सभी एक जैसे है। जनता को सहानुभूति दिखाकर धर्म के नामपर उसका गला घोंटना हो इन तंत्रों का उद्देश्य है। पंडितजी शास्त्रों की बात " खाना " हड़प करने के लिए बताते है कि " अब ये खाना किसी काम का नहीं रहा। इस खाने पर मूर्दे की छाया पड़ चुकी है। अगर बिटिया की ससुरवालों को इस बात का पता चल गया तो इन्हे लेने के देने पड़ जाएँगे। पंडितजी आगे कहते हैं - " मसान की चीज को लोग अच्छा नहीं मानते। इससे नुकसान हो सकता है। बिटिया के गर्भ पर इसका असर पड़ सकता है। मिठाई और खाने की चीजों पर नजर रखनेवाले पंडितजी , इनकी स्वार्थी लालची प्रवृति, किसी का कर्जा लेकर बनाया गया खाना खाने की चाह रखना, इससे उनकी असलीयत का पता इन बातों से चलता है।

आज समाज में पूजा - पाठ करनेवाला, धर्मशास्त्र की परिभाषा करनेवाला, ऐसे पाखण्डियों पर विश्वास करना भी मुश्किल है। किसी असली चेहरे के पीछे कौनसा नकली चेहरा छिपा है। अनपढ़ , ईमानदारी से अपना जीवन बितानेवाले लोगों को समाज में सताया जाता है। उनकी जमीन हड़प की जाती है। पैसा हड़प किया जाता है। राजतंत्र से जनतंत्र तक ऐसा चलता ही रहता है। समाज की यह समस्या है कि किसी के पास न्याय माँगा जाय और किस पर विश्वास किया जाय ? जिनके पास गुंडागिरी है उन्हे ही आजकल न्याय मिलता है। इस देश में आज जितने भी शासनतंत्र है वे सब लुटेरों के हाथ में बँट गये है।

२-२-६ राजनीतिक समस्या :-

नेता बनने के लिए समाज के सामने अपना एक अलग व्यक्तित्व बनाया जाता है, या लोगों को सहानुभूति दिखाकर लोकमत अपनी ओर खिंचा जाता है। लीडर बनने का एक फार्मूला होता है। भवानजी भारोसेजी को मौत पर अपना दुःख प्रकट करता है। सहानुभूति दिखाने का प्रयास करता है लेकिन उनकी सारी नजर शिक्षा - संस्था पर गढ़ी है। भारोसेजी सामाजिक कार्यकर्ता है। गाँव के कल्याण के लिए भारोसेजी ने शिक्षा " संस्था, आश्रम खोला है। पर भवानजी की दृष्टि शिक्षा संस्था का उत्तराधिकारी स्वयं को साबित करने की है। अगली पंचायत पर भवानजी की नजर है। ये सभी घटनाओं को चुनाव के एंगल से देखते है। इसलिए अपने आचारविचार अन्य लोगों से अलग रखते है। अध्यापिकाजी के प्रति सहानुभूति दिखलाते है। लेकिन अध्यापिकाजी का पैसा, गहने पाप कमाई की कमाई समझकर उन्होंने कम दाम देकर खरीदा था।

आज भी अपने देश के गांव गांव में ऐसे नेता है, जिनको केवल सत्ता प्यारी है। जनसेवा, समाजसेवा उनके लिए ढोंग है। सरकार का पैसा हड़प करना इनकी प्रवृत्ति है । गांव के भोले - भाले लोगों को अपने चंगुल में फँसाकर उनकी संपत्ति, खेत, गहने, पैसा हड़प करने की इनकी प्रवृत्ति है। गांव का लीडर बनकर सत्ता हासिल करना इनकी महत्वाकांक्षा है। राजनीति के क्षेत्र में लक्षित उथल - पुथल, नेताओं के ढोंग, स्वार्थ और यशलिप्सा समस्या नाटक में अंकित है। राजनीति को अपने

स्वार्थ का माध्यम बनाकर जनता के साथ नेता लोग विश्वासघात करते है। इसलिए कहा जाता है " तत्कालीन राजनीति मगरमच्छोंसे भरे तालाब सदृश थी, जिसमें से जनता - जनार्दन के लिए जल ग्रहण करना दुर्लभ था। नेताओं की धूर्तता, चुनाव में किये जानेवाले उपक्रमों की विद्रूपता, भाषणप्रियता और कार्य - विमुखता आदि नाटक में दिखायी देती है। पर युवापिढ़ी के क्रांति के बीज इसमें बोये जाते हैं।

२-२५७ शिक्षा-संस्था सम्बन्धी समस्या :-

गांव के कल्याण के लिए शिक्षा संस्थाएँ , आश्रम खोले जाते है। जिन लोगों ने शिक्षासंस्था प्रस्थापित करने के लिए परिश्रम किया है, वे ही उसका महत्व, मूल्य जानते है। शिक्षासंस्था के लिए अपनी जिम्मेदारी के साथ सुव्यवस्थित रखनेवाला उत्तराधिकारी नहीं मिला तो ऐसी संस्थाएँ ढह जाती है। इसलिए उत्तराधिकारी निस्वार्थीभाव से संस्था चलानेवाला होना चाहिए। भावनजी जैसा उत्तराधिकारी मिल जाय तो शिक्षा - संस्था या अन्य संस्था भी नहीं चल सकती। उत्तराधिकारी प्रशासन व्यवस्थित चलानेवाला मिलना एक समस्या बन गयी है।

३ निष्कर्ष

:::::::::::

निष्कर्ष :-

" चेहरे " नाटक में चित्रित विभिन्न समस्याओं का विवेचन - विश्लेषण करने के उपरान्त यही निष्कर्ष निकलता है कि नाटक में चित्रित समस्या किसी समसामयिक एवं स्थानीय समस्या को ही आधारभूत विषय बनाती है। " चेहरे " नाटक में जीवन की असंगतियां उद्घाटित की है। भारतीय समाज की कतिपय समस्याओं के यथातथ्य रुपों का परिचय मिलता है।

" चेहरे " नाटक में व्यक्ति और समाज के संदर्भ में भीतर और बाहेर के भेद, करनी और कथनी के अंतराल, सोच की उच्चता और कर्म की नीचता की विसंगतियाँ व्यक्त की गयी है। इस नाटक के माध्यम से कुछ पात्रों को सामने लाकर जीवन का चेहरा खुराए आज हर आदमी अपने असली चेहरे को छिपायें रखता है। आज समाज में आदमी को आदमी की पहचान करना मुश्किल हो गया है। क्योंकि चोर की खाल में ईमानदार और साह की खाल में चोर छिपाये रहता है।

" चेहरे " नाटक में सामाजिक समस्या को लेकर प्रेमविषयक समस्या, धर्म पाखण्डियों की समस्या, राजनीतिक समस्या, शोषक - शोषितों की समस्या, वेश्या व्यवसाय करनेवाली स्त्री की समस्या, वास्तववादी समस्या, आर्थिक समस्या, मसान में शेड बनवाने की समस्या आदि समस्याओं का

वास्तववादी चित्रण हुआ है। भूखा मानव को पशुवत बना देती है। मानव की पहली समस्या भूख है। " चेहरे " नाटक में इसी " भूख " ने मानव को राक्षस बना दिखाया है। एक भोले - भाले ग्रामीण द्वारा कर्ज की यातना भोगते हुए खान-पान का सामान बिटिया के लिए जुटाना, उसी पर सुखालाल, पंडित और परमानंद आदि की गिद्ध दृष्टि रखना भयावह लगता है। - " चेहरे " नाटक में खाने के अलावा समय काटने की भी समस्या है। शव के साथ श्मसान-भूमि में वक्त कैसा कटेगा , यह भी एक समस्या है। बारिश, क्या करें, कैसे करे, कहाँ जाएँ। कुछ समझ में नहीं आता।

इसके अतिरिक्त लडकियों को बहला - फुसलाकर लुटना, बंबई ले जाकर बेच देना, स्त्री - पुरुष संम्बन्धों के नैतिक सवाल, पाप - अनाचार , नैतिकता - अनैतिकता, सामाजिकता - असामाजिकता को समस्याओं पर चर्चा, जो घर घर की समस्या है, इन सभी समस्याओं का चित्रण नाटककार शंकर शेष ने इस नाटक में किया है। इसके साथ ही हृदय में छिपे सत्ता के आकर्षण को रेखांकित करना भी नाटककार नहीं भूला। सुख - सुविधा ने और लोभ लालच ने मानव मन की श्रध्दा - विश्वास का जितना दम घोटा है जो दूसरों का इस्तेमाल करते है। वे ऑक्टोपस के समान होते है - अपनी भुजाओं में दूसरों को जकड़ते हैं, उनका खून चुसने जाने जाते है - कुछ ऐसे भी होते है जो छोटों का शोषण करने लगते है।

" चेहरे " नाटक में चित्रित सभी समस्याओं का

अध्ययन करने के बाद ऐसा प्रतीत होता है कि - समस्याओं का चित्राण करना नाटककार का उद्देश्य नहीं है। वे मानवी जीवन का चित्राण करना चाहते थे, मानव - प्रवृत्तियों का चित्राण करना चाहते है पर इनके अंगस्वरूप में ये समस्याएँ आ चुकी है। जिन समस्याओं को उन्होंने उठाया है, वे मानव - जीवन की कमजोरियाँ है। [" चेहरे " नाटक का उद्देश्य समस्याओं का चित्राण करना नहीं है। इसलिए इस नाटक को समस्या प्रधान नाटक मानना संगत नहीं है।]

000

॥ " संदर्भ - सूचि " ॥

१] चेहरे नाटक पृष्ठ - ७२.
डॉ. शंकर शेष

२] हिन्दी समस्या नाटक - मत्ताकान्ता ओझा
पृष्ठ - १६२

३] डॉ. रामविलास शर्मा - प्रेमचंद
पृष्ठ - १६

४] चेहरे नाटक डॉ. शंकर शेष
पृष्ठ - ४६

५] चेहरे नाटक - डॉ. शंकर शेष
पृष्ठ - ७१

६] चेहरे नाटक - डॉ. शंकर शेष
पृष्ठ - ७१

७] रुपया छाा गया -
पृष्ठ - ७१

८] राजपथ से जनपथ - नटशिल्पी शंकर शेष
डॉ. सुरेश एवं डॉ. वीणा गौतम
पृष्ठ - १७३, १७१

९] कसाई अंक २ - पृष्ठ - ५३
दृश्य - ३.